एक नहीं तीन रामेश्वरम् □ -:

By 💖 Prakash Ji 💖

प्रथम रामेश्वर शिवलिंग-: आदरणीय प्यारे मित्रों तथा गुरुजनों आप लोगों तो यह बात जरूर पता होगा कि भगवान श्री रामचंद्र जी नें रावण वध से उन्हें जो ब्रह्म हत्या की दोष

लगा था उस दोष से मुक्ति प्राप्त करने हेतु सेतुबंध में रामेश्वरम शिवलिंग की स्थापना किए थे । इस एक रामेश्वरम शिवलिंग के अलावा और भी दो रामेश्वरम शिवलिंग भूमंडल पर विराजमान करता है ।

द्वितीय रामेश्वर शिवलिंग-: जब परशुराम जी ने 21 बार क्षत्रिय वंश का वध किये उन्हें महान पाप लगा... उसे पाप से मुक्त होने के लिए ऐसा कोई तीर्थ स्थल नहीं ऐसा कोई पर्वत नहीं ऐसा कोई मंदिर नहीं जहां हो भ्रमण नहीं किए हैं ऐसा कोई पवित्रनदी नहीं जहां पर हो भ्रमण नहीं किये हैं..... फिर भी उन्हें इस पाप से मुक्ति ना मिल पाया उनका मन बेचैन हो उठा.... लाखों करोड़ों क्षत्रियों की बध का पाप का भय उन्हें सताने लगा.... उन्होंने एक अश्वमेध यज्ञ भी किया और संपूर्ण पृथ्वी को कश्यप ऋषि को दान में दे दीए.... लक्ष्य मात्र इतना था कि वह इस महापापों से मुक्त हो जाएं...... पर इतने सब कुछ करने के बाद भी उन्हें उन महापापों से मुक्ति ना मिल पाया । अब अब परशुराम देवर्षि नारद जी के शरणापन्न हुए.. ..देवर्षि नारद जी ने उन्हें शिवलिंग का नित्य अर्चन के साथ शिवलिंग के निकट घोर तपस्या करने के लिए कहे । परशुराम जी भी देवर्षि नारद जी के बात मानकर.... शिवलिंग का नित्य अर्चन करके उसके सम्मुख कठोर तप आचरण करनेलग गए । उनके कठोर तपस्या में प्रसन्न होकर भगवान महेश्वरी प्रकट होकर उन्हें उन महापापों मुक्त किये.... और साथ ही साथ यह आशीर्वाद भी प्रदान किए की.... हे परशुराम जी शिवलिंग के नित्य आराधना करके मेरा तुम तपस्या कर रहे थे आज से यह शिवलिंग तुम्हारा नाम से जाना जाएगा यानी कि रामेश्वर शिवलिंग के नाम से प्रसिद्ध होगा । यहां पर एक बात आप लोगों को मैं बता देना चाहूंगा कि परशुराम जी का असली नाम राम ही था पर अपने साथ एक परशु धारण करने के कारण वह परशुराम के नाम से विख्यात थे । उज्जैन में 84 महादेव प्रसिद्ध हैं । उनमें से 29 वां महादेव हैं.... वही रामेश्वर मंदिर में स्थित शिवलिंग ही परशुराम जी के द्वारा आराधित रामेश्वर शिवलिंग है । श्री रामेश्वर महादेव: सती दरवाजे के पास रामेश्वर गली में।

तृतीय रामेश्वर शिवलिंग-: द्वापर युग में जब बलराम जी मद्यपान में मत्त होकर पूराण वक्ता सूत मुनि की बद्ध करदिए.... तब उन्हें ब्रह्म हत्या का दोष लग गया । इस ब्रह्म हत्या से मुक्ति प्राप्त करने हेतु हो तीर्थ क्षेत्र आदि का भ्रमण करने लग गए पर कहीं पर भी उन्हें ब्रह्म हत्या की दोष से मुक्ति ना मिल पाया । परिशेष में आकाशवाणी हुआ की हे राम आप प्रभास क्षेत्र गमन पूर्वक वहां पर शिवलिंग स्थापना करके भगवान शिव का कठोर तपस्या करें....

आपको इस ब्रह्म हत्या दोष से मुक्ति मिलेगा। आकाशवाणी की कथन के हिसाब से बलराम जी प्रभास क्षेत्र में जाकर वहां पर शिवलिंग स्थापित करके भगवान शंकर का कठोर तपस्या करने लग गए। भगवान शंकर उनके तपस्या में प्रसन्न होकर उन्हें ब्रह्म हत्या की दोष से मुक्त कर दिए और साथ ही साथ यह भी आशीर्वाद दिए की .... हे राम तुम्हारे द्वारा स्थापित यह शिवलिंग आज से रामेश्वरम शिवलिंग के नाम से प्रसिद्ध होगा। यहां पर मैं और एक बात बता देना चाहूंगा कि बलराम जी का असली नाम राम ही है पर उनके अंदर बाहुबल की अधिक्यता होने के कारण वह बलराम के नाम से प्रसिद्ध थे।

गुजराट के सौराष्ट्र में स्थित संकर्षण महादेव मंदिर को कभी जरूर जाइएगा वहां पर बलराम जी के द्वारा स्थापित रामेश्वरं शिवलिंग आपको देखने को मिलजाएगा। इसी भांति एक नहीं अपितु तीन रामेश्वरम हैं। हो सकता है इससे ज्यादा हो पर हमारे नजर में बस इतना आया है अभीतक......।

श्री रामचंद्र जी महाराज के द्वारा स्थापित शिवलिंग रामेश्वर।

श्री परशुराम जी के द्वारा स्थापित शिवलिंग रामेश्वर।

तथा श्री बलराम जी के द्वारा स्थापित शिवलिंग रामेश्वर।

यह तीन अलग-अलग शिवलिंग है पर तीनों का नाम एक है पर नाम का भाव अलग-अलग। एक रामेश्वरम का मतलब यह है कि जो श्री रामचंद्र महाराज जी के भी ईश्वर हैं वह एक रामेश्वरम हैं। दूसरे का अर्थ यह है कि जो श्री परशुराम जी के भी ईश्वर हैं वह दूसरे रामेश्वरम हैं। और जो श्री बलराम जी की भी ईश्वर हैं वह तीसरी रामेश्वरम हैं। जानकारी कैसा लगा जरूर बताइएगा। नमः शिवाय परमात्मने 🔱